8–3–67 ओमशांति रात्री क्लास

बच्चे जानते हैं कि कल त्रिमूर्ति शिवजयंती है। क्या त्रिमूर्ति शिव जयंती मनावेंगे वा सिर्फ शिव जयंती ही मनावेंगे?यह भी किसको पता नहीं है कि लक्ष्मी–नारायण विष्णु के दो रूप हैं।नारायण जयंती तो मनाते नहीं हैं।बाकी लक्ष्मी जयंती मनाते हैं।जिसको ही दीपमाला कहा जाता है। उसमें वास्तव में दोनों इकट्ठे हैं तब ही महालक्ष्मी कहते हैं।दो भुजा लक्ष्मी की, दो भुजा नारायण की चार भुजायें हो गईं विष्णु की ;परंतु पूजा फिर महालक्ष्मी की करते हैं ;परंतु वो दो–चार भुजा का हिसाब नहीं रखते हैं।महालक्ष्मी कह देते हैं।अब लक्ष्मी वो महालक्ष्मी बात तो एक ही है।इसलिए ही महालक्ष्मी कहना अच्छा है। लक्ष्मी नाम कॉमन है।बहुतों के नाम लक्ष्मी है।अब तुम बच्चों को वास्तव में त्रिमूर्ति शिव जयंती मनानी चाहिए।इन त्रिमूर्ति ब्र.वि.शं. की भी मनानी चाहिए। बाप आकर ब्रह्मा द्वारा स्थापना ,शंकर द्वारा विनाश और विष्णु द्वारा पालना कराते है।....शिव के साथ इनकी भी जयंती मनानी चाहिए। कृष्ण की भी जयंती मनाते हैं।जगतअम्बा की मनाते हैं वा नहीं वो कह नहीं सकते हैं। काली की पूजा तो होती है। काली, दुर्गा,जगतअम्बा बात तो एक ही है।नवरात्री में इनका मनाते हैं।तो तुमको त्रिमूर्ति शिव जयंती ही मनानी पड़े।चित्र भी त्रिमूर्ति शिव का देना पड़े।अब यह बाबा बैठे हैं।यह स्टुडेंट है।यह तुम्हारा सखा भी होगा।प्रजापिता बाप भी हुआ।माता भी हुई। तो तुमको माताश्चपिता.....तो यह महिमा शिवबाबा की हुई वा इनकी। समझने की बात है ना।इनको गॉड फादर ही कहेंगे। फिर इनके आगे आकर महिमा करते हैं.....तुम्हीं हो माता पिता.....अब इसमें समझ की बात है ना।यह और वो दोनों इकट्ठे।अब तुम्हारे साथ खेलते हैं तो दोनों बंधु हो जाते हैं।वो भी कहते हैं मैं इन द्वारा खेलता हूँ। ऐसे नहीं कहेंगे कि मैं इनके साथ खाता हूँ। वो खाते नहीं हें वो तो अभोक्ता है। रसना भी इनकी ही आत्मा को मिलती है। ब्रह्मा द्वारा शिवबाबा से वर्सा मिलता है नई दुनियां का।तो जरूर ही है कि पुरानी दुनियां का विनाश ही होना चाहिए। अब विनाश कौन करे?शंकर को निमित्त बनाया है। वो भी कुछ करते नहीं हैं।यह ड्रामा में नूंध है। विनाश कराते हैं तो वो भी तो अच्छा है ना।बुलाते ही हैं कि आकर नई दुनियां में ले जाओ। तो शरीरों का जरूर विनाश कराना पड़ेगा ना। इसलिए कहा जाता है शंकर द्वारा विनाश। बाकी करता तो ना ही शंकर है ना ही शिवबाबा है।यह विनाश ही तो कल्याणकारी है। शंकर भी देवता है। वो हिंसा नहीं करते हैं। ड्रामा अनुसार पुराने शरीरों का विनाश होता है।यह शुभकारी है। पुराने शरीर छुड़ाकर आत्माओं को ले जाना अच्छा ही है ना। इसलिए ही पुकारते हैं कि बाबा आओ। हम आत्मायें जो कि याद की यात्रा से प्योर बन रही हैं उनको ले जाओ। आत्मायें चली जावेंगी। बाकी शरीर यहीं खतम हो जावेगा इस महाभारी लड़ाई द्वारा। फिर भी थोड़े रहते हैं। नही तो .....हो जावे।बाप आते ही हैं संगम पर। नर्क से स्वर्ग बनाते हैं। जबकि मनुष्य पतित हैं तब ही बाप को बुलाते हैं। तो ब्रह्मा द्वारा आकर सैम्पलिंग लगाते हैं आदि सनातन देवी देवता धर्म की। तुम अभी ब्राह्मण हो। फिर देवता बनोगे। स्थापना हो जावेगी तो पुरानी दुनियां का विनाश हो जावेगा। बाप आते ही हैं संगम पर। ऐसे नहीं कि जब प्रलय होती है तब बाप आते हैं। ना प्रलय होती है ना ही पीपल के पत्ते पर कृष्ण ही आता है। यह है कल्याणकारी पुरुषोत्तम संगमयुग। बच्चे जानते हैं कि हम संगमयुगी हैं। बाकी मनुष्य हैं कलियुग में। ब्रह्मा की रात सो भी ब्राह्मणों की रात है। एक की ही रात थोड़े ही हो सकती है।इस समय बात पूरी होकर फिर दिन शुरू होता है। दिन प्रतिदिन आत्मा और परमात्मा का परिचय देने की प्वाइंट्स देते रहते हैं। ओम।

सूचना – त्रिमूर्ति शिव जयंती के शुभ अवसर पर भेजी हुई तारें सभी की पाई हैं जी। और सब सेन्टर्स का सर्विस समाचार भी पाया है। विदाई।